गवेषणा

अनुप्रयुक्त भाषाविज्ञान, भाषा शिक्षण तथा
साहित्य चिंतन की शोध पत्रिका

अंक 95/ जुलाई-दिसंबर 2009

बहुभाषिकता : नए आयाम

प्रधान संपादक
रामवीर सिंह

संपादक
भरत सिंह

सहायक संपादक
रमेश चन्द्र

संपादन सहायक
प्रकाश साव

प्रबंध
आशुतोष शुक्ल

केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा
(मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार)
हिंदी संस्थान मार्ग, आगरा–282005

गवेषणा
अनुप्रयुक्त भाषाविज्ञान, भाषा शिक्षण
तथा साहित्य चिंतन की शोध पत्रिका

अंक 95/ जुलाई-दिसंबर 2009

© केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा
प्रकाशक : **डॉ० चंद्रकांत त्रिपाठी,** कुलसचिव
वेबसाईट : www.hindisansthan.org

मूल्य	व्यक्तिगत	प्रति अंक	रु. 40.00
		वार्षिक	रु. 150.00
	संस्थागत	वार्षिक	रु. 250.00
	विदेशों में	प्रति अंक	$ 10.00
		वार्षिक	$ 40.00

आवरण :

मुद्रक :

'गवेषणा' में प्रकाशित सामग्री से संपादक मंडल या संस्थान की सहमति अनिवार्य नहीं है।

अनुक्रम

संपादकीय/	**रामवीर सिंह**	5
इस अंक में/	**भरत सिंह**	6-7

बहुभाषिकताः सिद्धांत और इतिहास

बहुभाषिकताः संदर्भ सिमटती दूरियां सूचना क्रांति/	**ओम विकास**	8-28
फोर्ट विलियम कॉलेज की भाषा-नीति और विलियम प्राइस/	**शीतांशु**	29-40
बहुभाषिकता एवं भारत में बहुभाषिकता की स्थिति/	**स्वस्ति मिश्रा**	41-49
भारत की भाषाएँ : बहुभाषिकता/	**महावीर सरन जैन**	50-73
सभी भाषाएँ बहुमिश्र हैं/	**भगवान सिंह**	74-81
भारतीय साहित्य में बहुभाषिकता : अतीत और वर्तमान/	**राधावल्लभ त्रिपाठी**	82-102

बहुभाषिकता और भाषा-नीति

बहुभाषिकता के मूल में शैक्षणिक प्रतिमान/	**आर.के. अग्निहोत्री**	103-111
उत्तर-पूर्व भारत में बहुभाषिकता, भाषा-शिक्षा एवं बहुभाषिक शिक्षा की प्रक्रिया/	**सरजुबाला देवी**	112-125
भारतीय बहुभाषिकता और भाषा-नीति : समस्याएं और समाधान/	**महेन्द्र राजा जैन**	126-132
बहुभाषिकता और भारत की भाषायी स्थिति/	**कृष्ण कुमार गोस्वामी**	133-141
भारत की बहुभाषिकता और हिंदी की स्थिति/	**कृष्णदत्त पालीवाल**	142-154

बहुभाषिकता : भारतीय परिदृश्य

भारतीय बहुभाषिकताः कुछ विचार-बिंदु/	**बी.एन. पटनायक**	155-159

बहुभाषिकता के आलोक में उत्तर-पूर्वांचलः
दशा और दिशा/ **भूपेन्द्र राय चौधरी** 160-168
पूर्वोत्तर भारत का भाषायी-संसार/ **सुशील कुमार शर्मा** 169-172
बहुभाषिकता एवं हिंदी का प्रतिग्राह्यता स्तरः
झारखंड के जनजातीय समुदायों के संदर्भ में/**शैलेंद्र मोहन** 173-181
महानगर दिल्ली के भाषा-व्यवहार का स्वरूप/**भरत सिंह** 182-191
भारतीय भाषाओं में वैचारिक एवं सांस्कृतिक एकसूत्रता/ **बालशौरि रेड्डी** 192-198

पुस्तक समीक्षा

हिंदी समाज की भाषाई संवेदना को छूती एक पुस्तक/ 199-201
हिंदी का बहुआयामी विश्लेषण/ 202-204

इस अंक के लेखक

सदस्यता फार्म

संपादकीय

विचारों के आदान-प्रदान के लिए व्यक्ति का बहुभाषी होना एक स्वाभाविक प्रक्रिया होती है। विश्व की अन्य भाषाओं में संजोकर रखी हुई धरोहर में तभी साझीदार बना जा सकता है जब हम उन भाषाओं की अर्थछटाओं को पहचानने में समर्थ बनें। यह सामर्थ्य परस्पर संवाद सहयोग से शनैः शनैः प्रबल होती है। इसी से चिन्तन बहुआयामी बनता है। इसलिए भाषा कहें अथवा बहुभाषिकता, यह एक ऐसा उपकरण है जिससे दुनिया के किसी भी स्थान पर बैठकर व्यक्ति अपने को अकेला और असहाय महसूस नहीं करता। इसलिए बहुभाषिकता की ओर जनमानस का प्रारंभ से ही आकर्षण रहा है। आवागमन, यातायात, पर्यटन, जीविका जैसे अनेक माध्यम इसकी परिधि को निरंतर विस्तार देते हैं। और आज भूमण्डलीकरण की गति इसकी अनिवार्यता को बल प्रदान कर रही है।

बहुभाषिकता संस्कृतियों का पुनीत संगम स्थल होती है। अपना दूसरे के लिए सिखाना, दूसरे का स्वयं सीखना की समरसता नई ऊर्जा से अपने प्रयोक्ता को सशक्त बनाती है। भारत जैसा विशाल देश दुनिया के लिए इसका उदाहरण है। अपने में स्वयं बहुभाषी, बहुसंस्कृति संपन्न होते हुए भी दूसरों की भाषा और संस्कृति का आदर इस देश के नागरिकों की सदियों से पहचान रही है। संस्थान इसी पहचान को अपने विद्वान लेखकों के विचारों का सहारा लेकर चिंतन जगत के सामने उपस्थित है।

वर्तमान में भारत में आर्य, द्रविड़, आस्ट्रो-एशियाटिक, तिब्बत-बर्मन एवं अन्य भाषा परिवारों की भाषाएं बोली जाती हैं। लंबे समय से सह-अस्तित्व के कारण इन भाषाओं में परस्पर आदान-प्रदान होता रहा और ये परस्पर एक दूसरे को प्रभावित भी करती रही हैं।

बहुभाषिकता की दशा और दिशा, लक्षण, प्रकृति एवं नए आयामों पर केंद्रित 'गवेषणा' का यह अंक आपके हाथों में है। इस विशेषांक के लिए हमें देश के विद्वानों के आलेख और सुझाव प्राप्त हुए। उपयुक्त मार्गदर्शन के लिए हम उन सभी सुधीजनों के आभारी हैं।

'गवेषणा' के इस अंक के बारे में अपने विचारों से आप हमें अवगत कराएंगे, ऐसी आशा है।

रामवीर सिंह

इस अंक में

'भाषा' एक समाज-सांस्कृतिक प्रतीयमान (Phononenon) है जो किसी भाषा-समुदाय की सामाजिक और सांस्कृतिक संरचना और उसके प्रकार्यों से अत्यधिक सम्बद्ध है। ट्रडगिल (A74:13) का कहना है कि भाषा से तात्पर्य केवल सम्प्रेषणता मात्र ही नहीं है बल्कि भाषा का मुख्य कार्य समाज के विभिन्न समुदायों के साथ संबंध स्थापित करना है इस बात से यह स्पष्ट है कि भाषा और समाज में एक अटूट संबंध है। अतः भाषा का अध्ययन समाज के सन्दर्भ में ही किया जा सकता है समाज से हटकर भाषा का अपना कोई अस्तित्व नहीं है। लेबाव इसी आधार पर 'न्यूयार्क' सिटी के भाषा वैज्ञानिक अध्ययन में यह सिद्ध करने का प्रयास करते हैं कि भाषा-व्यवहार के नियम, सामाजिक नियमों से प्रभावित होते हैं।

ट्रडगिल (1974:14) भाषा व्यवहार के दो प्रमुख प्रकार्य (aspects) मानते है पहला सामाजिक सह संबंध और दूसरा भाषा द्वारा वक्ता की सामाजिक स्थिति।

भाषा के इस सामाजिक परिप्रेक्ष्य में भी आज के दिन उतना ही तीव्रगति से परिवर्तन हुआ है जितना सामाजिक व्यवस्था में, बीसवी सदी के उत्तरार्द्ध में और औद्योगीकरण, राजनैतिक केंद्रीकरण, व्यापारिक संबंध, शिक्षा का प्रसार नगरीकरण आदि की प्रक्रिया ने भाषा की प्राचीन सीमाओं को समाप्त कर एक नई स्थिति पैदा कर दी है। उपर्युक्त कारणों से एक भाषा-समुदाय का सम्पर्क दूसरे भाषा समुदाय के साथ हुआ, जिसके फलस्वरूप भाषा के विभिन्न समाज संदर्भित रूप, शैली, प्रयुक्ति, बोली आदि के साथ-साथ, द्विभषिकता/बहुभाषिकता, भाषा-मिश्रण, कोड-परिवर्तन कोड मैट्रिक आदि विभिन्न संकल्पनाओं पर भी विचार करना आवश्यक हो गया है।

स्वतंत्रता के पश्चात भारतीय समाज में आर्थिक, औद्योगिक, राजनैतिक, सामाजिक, शैक्षिक कारणों से जो गतिशीलता आई है, उसके दो अन्य परिणाम ध्यान देने योग्य हैं। पहला-महानगरीय प्रकृति के कारण बहुजातीय, बहुवर्गीय एवं बहुभाषिक समुदाय का विकास तथा दूसरा विभिन्न वर्गों में निरन्तर सम्पर्क के कारण भाषिक सम्पर्क की ऐसी विशिष्ट परिस्थितियों का विकास, जिसमें भाषा सम्मिश्रण और कोड परिवर्तन भाषा-व्यवहार के मुख्य अभिलक्षण बन गये हैं। एक स्तर पर ये स्थितियाँ समसामयिक भारतीय भाषिक दृश्य का स्वाभाविक और अभिन्न अंग है, क्योंकि भारतीय समाज अपनी सांस्कृतिक और भाषाई अस्मिता के कारण अपनी मातृभाषा के साथ जुड़ा रहता है। योरोप के विभिन्न देशों की भाँति भारतीय भाषा-समुदाय अन्य भाषा-भाषी

व्यक्ति पर किसी प्रकार का ऐसा सामाजिक दबाव नहीं डालता जिससे वह अपनी मातृभाषा से विलग होने के लिए विवश हो। भारतीय संस्कृति की यह मौलिक स्वतंत्रता ही भारतीय समाज को प्राकृतिक रूप में विकसित होने की पूरी छूट दे देती है। यही कारण है आज भारतीय संस्कृति अपने सामाजिक, सांस्कृति एवं भाषायी विविधता भरे स्वरूप के कारण वैश्विक पटल पर एक महत्वपूर्ण पहचान रखती है।

इस अंक में भारतीय विशिष्टता को बहुभाषिकता के संदर्भ में देखने का प्रयास किया गया है। विषय के विद्वानों ने बहुभाषिकता के सैद्धांतिक पक्ष से लेकर भाषा-नीति, भारतीय सामाजिक संदर्भ में भाषायी परिदृश्य विशेषकर पूर्वोत्तर एवं अन्य जनजातीय समुदायों के भाषायी समुदायों के संदर्भ में भाषायी प्रयोग को समझने-बूझने का यह प्रयास भारतीय भाषाओं में वैचारिक एवं सांस्कृतिक एकसूत्रता को खोजने और सिद्ध करने का प्रयास भी कहा जा सकता है। भारतीय बहुभाषिकता भारतीय संस्कृति की आत्मा है। भारत में बहुभाषिकता भारतीय मानस की अभिव्यक्ति का एक अनिवार्य घटक है। इस अंक में प्रकाशित लेखों से यह बात प्रमाणित हो जाती है कि बहुभाषिकता सम्प्रेषण-व्यवस्था में बाधा नहीं बल्कि समाज के सभी वर्गों के बीच सहज सम्प्रेषणीयता का सहज और प्राकृतिक माध्यम है। यह बहुभाषिकता हिंदी और अंग्रेजी भाषाओं की एक विशेष भूमिका के बावजूद अपनी क्षेत्रीय भाषायी अस्मिता को निरन्तर संरक्षित किये हुए बिना किसी हिचक और विरोध के सम्प्रेषण के दायित्व को पूरा कर रही है। यही है भारतीय बहुभाषिकता का वह स्वरूप जो भारत से बाहर किसी भारतीय का गर्व से सिर ऊँचा कर देता है।

भरत सिंह